

٢

سَيَقُولُ الشُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبَلَتِهِمْ						
अब कहेंगे	वेवकूफ	से	लोग	किस	उन्हें (मुसलमानों को) फेर दिया	उन का क़िबला से
الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ						
वह जिस	वह थे	उस पर	आप कह दें	अल्लाह के लिए	मशरिफ और मग़रिब	वह हिदायत देता है जिस को चाहता है
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (١٤٢) وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ						
तरफ़	रास्ता	सीधा	142	और उसी तरह	हम ने तुम्हें बनाया	उम्मत मोअतदिल ताकि तुम हो
عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي						
पर	लोग	और हो	रसूल	तुम पर	गवाह	और नहीं मुक़र्र किया हम ने
كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعَ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ						
आप (स) थे	उस पर	मगर	ताकि हम मालूम कर लें कौन	पैरवी करता है	रसूल (स) जो	उस से जो
وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ وَمَا كَانَ اللَّهُ						
और वेशक	यह थी	भारी बात	मगर	पर	जिन्हें	हिदायत दी
لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ (١٤٣) قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ						
कि वह ज़ाया करे	तुम्हारा ईमान	वेशक अल्लाह	लोगों के साथ	बड़ा शफ़ीक़	रहम करने वाला	143 हम देखते हैं
وَجْهَكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُؤَلِّينَكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ						
आप (स) का मुँह	में (तरफ़)	आस्मान	तो ज़रूर हम फेर देंगे आप को	क़िबला	उसे आप (स) पसन्द करते हैं	पस आप फेर लें
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ وَإِنَّ الَّذِينَ						
मसजिदे हराम (खाने क़़वा)	और जहाँ कहीं	तुम हो	सो फेर लिया करो	अपने मुँह	उस की तरफ़	और वेशक
أُوتُوا الْكِتَابَ لِيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا						
दी गई किताब (अहले किताब)	वह ज़रूर जानते हैं	कि यह	हक़	से	उन का रब	और नहीं
يَعْمَلُونَ (١٤٤) وَلَئِنْ آتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا						
वह करते हैं	144	और अगर	आप (स) लाएं	जिन्हें	दी गई किताब (अहले किताब)	तमाम निशानियां
قِبْلَتَكَ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبَلَتِهِمْ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ						
आप (स) का क़िबला	और न	आप (स)	पैरवी करने वाले	उन का क़िबला	और नहीं	उन से कोई
وَلَئِنْ أَتَبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ						
और अगर	आप ने पैरवी की	उन की खाहिशात	उस के बाद	कि आ चुका आप के पास	इल्म	वेशक आप (स)
إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ (١٤٥) الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ						
अब	से	वे इन्साफ़	145	और जिन्हें	हम ने दी	किताब
أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (١٤٦)						
अपने बेटे	और वेशक	एक ग़िरोह	उन से	वह छुपाते हैं	हक़	हालाकि वह

अब वेवकूफ कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज़ ने उस क़िबले से फेर दिया जिस पर वह थे? आप कह दें कि मशरिफ़ और मग़रिब अल्लाह (ही) का है, वह जिस को चाहता है हिदायत देता है सीधे रास्ते की तरफ़। (142)

और उसी तरह हम ने तुम्हें मोअतदिल उम्मत बनाया ताकि तुम हो लोगों पर गवाह, और रसूल (स) तुम पर गवाह हों, और हम ने मुक़र्र नहीं किया था वह क़िबला जिस पर आप (स) थे मगर (इस लिए) कि हम मालूम कर लें कौन रसूल (स) की पैरवी करता है और कौन फिर जाता है अपनी एड़ियों पर (उलटे पावों), और वेशक यह भारी बात थी मगर उन पर (नहीं) जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाया कर दे, वेशक अल्लाह लोगों के साथ बड़ा शफ़ीक़, रहम करने वाला है। (143)

हम देखते हैं बार बार आप (स) का मुँह आस्मान की तरफ़ फिरना, तो ज़रूर हम आप को उस क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसे आप (स) पसन्द करते हैं, पस आप (स) अपना मुँह मसजिदे हराम (खाने क़़वा) की तरफ़ फेर लें, और जहाँ कहीं तुम हो फेर लिया करो अपने मुँह उस की तरफ़, और वेशक अहले किताब ज़रूर जानते हैं कि यह हक़ है उन के रब की तरफ़ से, और अल्लाह उस से वेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (144)

और अगर आप (स) लाएं अहले किताब के पास तमाम निशानियां वह (फिर भी) आप (स) के क़िबले की पैरवी न करेंगे, और न आप (स) उन के क़िबले की पैरवी करने वाले हैं, और उन में से कोई किसी (दूसरे) के क़िबले की पैरवी करने वाला नहीं, और अगर आप ने उन की खाहिशात की पैरवी की उस के बाद कि आप के पास इल्म आ चुका तो अब वेशक आप वे इन्साफ़ों में से होंगे। (145)

और जिन्हें हम ने किताब दी वह उसे पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं, और वेशक उन में से एक ग़िरोह हक़ को छुपाता है हालांकि वह जानते हैं। (146)

(यह) हक है आप के रब की तरफ से, पस आप न हो जाएं शक करने वालों में से। (147)

और हर एक के लिए एक सिमत है जिस तरफ वह रख करता है, पस तुम नेकियों में सबकत ले जाओ, जहां कहीं तुम होगे अल्लाह तुम्हें इकट्ठा कर लेगा, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (148)

और जहां से आप (स) निकलें, पस अपना रख मसजिदे हराम की तरफ कर लें, और वेशक आप के रब (की तरफ) से यही हक है और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (149)

और जहां कहीं से आप निकलें, अपना रख मसजिदे हराम की तरफ कर लें, और तुम जहां कहीं हो सो कर लो अपने रख उस की तरफ, ताकि लोगों के लिए तुम पर कोई हुज्जत न रहे, सिवाए उन के जो उन में से बे इन्साफ हैं, सो तुम उन से न डरो, और मुझ से डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दूँ, और ताकि तुम हिदायत पाओ। (150)

जैसा कि हम ने तुम में एक रसूल तुम में से भेजा, वह तुम पर हमारी आयतें पढ़ते हैं और वह तुम्हें पाक करते हैं, और तुम्हें किताब ओ हिक्मत (दानाई) सिखाते हैं, और तुम्हें वह सिखाते हैं जो तुम न थे जानते। (151)

सो मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद रखूंगा, और तुम मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री न करो। (152)

ऐ ईमान वालो! तुम सवर और नमाज़ से मदद मांगो, वेशक अल्लाह सवर करने वालों के साथ है। (153)

और जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (उस का) शऊर नहीं रखते। (154)

और हम तुम्हें ज़रूर आजमाएंगे कुछ ख़ौफ से, और भूक से, और माल ओ जान और फलों के नुक़सान से, और आप (स) खुशख़बरी दें सवर करने वालों को। (155)

वह जिन्हें जब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं। (156)

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۚ وَلِكُلِّ وُجْهَةٌ هُوَ								
हक	से	आप का रब	पस आप न हो जाएं	से	शक करने वाले	147	और हर एक के लिए	एक सिमत
مُؤَيِّدَهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ آيِنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا ۖ								
उस तरफ रख करता है	पस तुम सबकत ले जाओ	नेकियां	जहां कहीं	तुम होगे	ले आयागा तुम्हें	अल्लाह	इकट्ठा	
إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ ۝۱۴۸ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ								
वेशक अल्लाह	पर	हर	चीज़	क़ुदरत रखने वाला	148	और से	जहां	आप (स) निकलें
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَإِنَّهُ لِلْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا								
तरफ	मसजिदे हराम	और वेशक यही	हक	आप (स) के रब से	और नहीं	अल्लाह	बेख़बर	उस से जो
تَعْمَلُونَ ۚ ۝۱۴۹ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ								
तुम करते हो	149	और जहां से	आप निकलें	पस कर लें	अपना रख	तरफ	मसजिदे हराम	
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۖ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ								
और जहां कहीं	तुम हो	सो कर लो	अपने रख	उस की तरफ	ताकि न	रहे	लोगों के लिए	तुम पर
حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۖ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي ۚ وَلَآتِمَّ								
कोई हुज्जत	सिवाए	वह जो कि	वे इन्साफ	उन से	सो तुम न डरो उन से	और डरो मुझ से	और मैं पूरी कर दूँ	ताकि मैं
نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۚ ۝۱۵۰ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ								
अपनी नेमत	तुम पर	और ताकि तुम	हिदायत पाओ	150	जैसा कि	हम ने भेजा	तुम में	एक रसूल
يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا								
वह पढ़ते हैं	तुम पर	हमारे हुक्म	और पाक करते हैं तुम्हें	और सिखाते हैं तुम को	किताब	और हिक्मत	और सिखाते हैं तुम्हें	जो
لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۚ ۝۱۵۱ فَادْكُرُونِي أذكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۚ ۝۱۵۲								
तुम न थे	जानते	151	सो याद करो मुझे	मैं याद रखूंगा तुम्हें	और तुम शुक्र करो मेरा	और न	और नाशुक्री करो मेरी	152
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۚ ۝۱۵۳								
ऐ	जो कि	ईमान लाए	तुम मदद मांगो	सवर से	और नमाज़	वेशक अल्लाह	साथ	सवर करने वाले
وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أحيَاءٌ وَلَكِنْ								
और न	कहो	उसे जो	मारे जाएं	में	रास्ता	अल्लाह	मुर्दा	बल्कि
لَا تَشْعُرُونَ ۚ ۝۱۵۴ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ								
तुम शऊर नहीं रखते	154	और ज़रूर हम आजमाएंगे तुम्हें	कुछ	से	ख़ौफ	और भूक	और नुक़सान	
مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۚ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۚ ۝۱۵۵ الَّذِينَ إِذَا								
से	माल (जमा)	और जान (जमा)	और फल (जमा)	और खुशख़बरी दें	सवर करने वाले	155	वह जो	जब
أَصَابَتْهُمْ مُّصِيبَةٌ ۖ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۚ ۝۱۵۶								
पहुँचे उन्हें	कोई मुसीबत	वह कहें	हम अल्लाह के लिए	और हम	उस की तरफ	लौटने वाले	156	

ع ١٤  
١٥  
١٦  
١٧  
١٨  
١٩  
٢٠  
٢١  
٢٢  
٢٣  
٢٤  
٢٥  
٢٦  
٢٧  
٢٨  
٢٩  
٣٠  
٣١  
٣٢  
٣٣  
٣٤  
٣٥  
٣٦  
٣٧  
٣٨  
٣٩  
٤٠  
٤١  
٤٢  
٤٣  
٤٤  
٤٥  
٤٦  
٤٧  
٤٨  
٤٩  
٥٠  
٥١  
٥٢  
٥٣  
٥٤  
٥٥  
٥٦  
٥٧  
٥٨  
٥٩  
٦٠  
٦١  
٦٢  
٦٣  
٦٤  
٦٥  
٦٦  
٦٧  
٦٨  
٦٩  
٧٠  
٧١  
٧٢  
٧٣  
٧٤  
٧٥  
٧٦  
٧٧  
٧٨  
٧٩  
٨٠  
٨١  
٨٢  
٨٣  
٨٤  
٨٥  
٨٦  
٨٧  
٨٨  
٨٩  
٩٠  
٩١  
٩٢  
٩٣  
٩٤  
٩٥  
٩٦  
٩٧  
٩٨  
٩٩  
١٠٠

ع ١٨  
١٩  
٢٠  
٢١  
٢٢  
٢٣  
٢٤  
٢٥  
٢٦  
٢٧  
٢٨  
٢٩  
٣٠  
٣١  
٣٢  
٣٣  
٣٤  
٣٥  
٣٦  
٣٧  
٣٨  
٣٩  
٤٠  
٤١  
٤٢  
٤٣  
٤٤  
٤٥  
٤٦  
٤٧  
٤٨  
٤٩  
٥٠  
٥١  
٥٢  
٥٣  
٥٤  
٥٥  
٥٦  
٥٧  
٥٨  
٥٩  
٦٠  
٦١  
٦٢  
٦٣  
٦٤  
٦٥  
٦٦  
٦٧  
٦٨  
٦٩  
٧٠  
٧١  
٧٢  
٧٣  
٧٤  
٧٥  
٧٦  
٧٧  
٧٨  
٧٩  
٨٠  
٨١  
٨٢  
٨٣  
٨٤  
٨٥  
٨٦  
٨٧  
٨٨  
٨٩  
٩٠  
٩١  
٩٢  
٩٣  
٩٤  
٩٥  
٩٦  
٩٧  
٩٨  
٩٩  
١٠٠

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾									
157	हिदायत यापता	वह	और यही लोग	और रहमत	उन का रब	से	इनायतें	उन पर	यही लोग
إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ									
उमरा करे	या	खाने कड़ावा	हज करे	पस जो	अल्लाह	निशानात	से	और मरवा	सफा वेशक
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ									
तो वेशक अल्लाह	कोई नेकी	खुशी से करे	और जो	उन दोनों	वह तवाफ करे	कि	उस पर	तो नहीं कोई हर्ज	
شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى									
और हिदायत	खुली निशानियां	से	जो नाज़िल किया हम ने	छुपाते हैं	जो लोग	वेशक	158	जानने वाला	क़द्रदान
مِّن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ									
लानत करता है उन पर अल्लाह	यही लोग	किताब में			लोगों के लिए	हम ने वाज़ेह कर दिया	उस के बाद		
وَيَلْعَنُهُمُ اللَّعْنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنَّاهُ									
और वाज़ेह किया	और इस्लाह की	उन्होंने ने तौबा की	वह लोग जो	सिवाए	159	लानत करने वाले	और लानत करते हैं उन पर		
فَأُولَئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ									
जो लोग	वेशक	160	रहम करने वाला	मुआफ करने वाला	और मैं	उन्हें	मैं मुआफ करता हूँ	पस यही लोग हैं	
كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَئِكَ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ									
और फ़रिश्ते	अल्लाह	लानत	उन पर	यही लोग	काफ़िर	और वह	और वह मर गए	काफ़िर हुए	
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ									
अज़ाब	उन से	न हलका होगा	उस में	हमेशा रहेंगे	161	तमाम	और लोग		
وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿١٦٢﴾ وَاللَّهُمَّ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ									
निहायत मेहरवान	सिवाए उस के	नहीं इबादत के लाइक	(एक) यकता	माबूद	और माबूद तुम्हारा	162	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें	
وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا									
रात	और बदलते रहना	और ज़मीन	आस्मानों	पैदाइश	में	वेशक	163	रहम करने वाला	
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَّيْتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾									
और जो कि	लोग	नफ़ा देती है	साथ जो	समन्दर	में	बहती है	जो कि	और कशती	और दिन
उस के मरने के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	पानी	से	आस्मानों से	अल्लाह	उतारा	
और बादल	हवाएं	और बदलना	हर (किसम) के जानवर			से	उस में	और फैलाए	
المُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَّيْتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾									
164	अक़ल वाले	लोगों के लिए	निशानियां	और ज़मीन	आस्मान	दरमियान	ताबे		

यही लोग हैं जिन पर उन के रब की तरफ से इनायतें हैं और रहमत है, और यही लोग हिदायत यापता है। (157)

वेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह के निशानात में से हैं, पस जो कोई खाने कड़ा का हज करे या उमरा तो उस पर कोई हर्ज नहीं कि उन दोनों का तवाफ करे, और जो खुशी से कोई नेकी करे तो वेशक अल्लाह क़द्रदान, जानने वाला है। (158)

वेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने खुली निशानियां और हिदायत नाज़िल की, उस के बाद कि हम ने उसे किताब में लोगों के लिए वाज़ेह कर दिया, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है, और उन पर लानत करते हैं लानत करने वाले। (159)

सिवाए उन लोगों के जिनमें ने तौबा की और इस्लाह की और वाज़ेह कर दिया, पस यही लोग हैं जिनमें मैं मुआफ़ करता हूँ, और मैं मुआफ़ करने वाला, रहम करने वाला हूँ। (160)

वेशक जो लोग काफ़िर हुए और वह (काफ़िर) ही मर गए, यही लोग हैं जिन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। (161)

वह उस में हमेशा रहेंगे, उन से अज़ाब हलका न होगा, और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (162)

और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, निहायत मेहरवान, रहम करने वाला। (163)

वेशक ज़मीन और आस्मानों की पैदाइश में, और रात और दिन के बदलते रहने में, और कशती में जो समन्दर में बहती है (उन चीज़ों के) साथ जो लोगों को नफ़ा देती हैं, और जो अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को ज़िन्दा किया उस के मरने के बाद, और उस में हर किसम के जानवर फैलाए, और हवाओं के बदलने में, और आस्मान ओ ज़मीन के दरमियान ताबे बादलों में निशानियां हैं (उन) लोगों के लिए (जो) अक़ल वाले हैं। (164)

और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीक अपनाते हैं वह उन से मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से मुहब्बत, और जो लोग ईमान लाए (उन्हें) अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़ियादा है, और अगर देख लें जिन्होंने ने जुल्म किया (उस वक्त को) जब यह अज़ाब देखेंगे कि तमाम कुव्वत अल्लाह के लिए है और यह कि अल्लाह का अज़ाब सख्त है। (165)

जब बेज़ार हो जाएंगे वह जिन की पैरवी की गई उन से जिन्होंने ने पैरवी की थी और वह अज़ाब देख लेंगे, और उन से तमाम वसाइल कट जाएंगे। (166)

और वह कहेंगे जिन्होंने ने पैरवी की थी काश हमारे लिए दोबारा (दुन्या में लौट जाना होता) तो हम उन से बेज़ारी करते जैसे उन्होंने ने हम से बेज़ारी की, उसी तरह अल्लाह उन के अमल उन्हें हसरतें बना कर दिखाएगा, और वह आग से निकलने वाले नहीं। (167)

ऐ लोगो! खाओ उस में से जो ज़मीन में है हलाल और पाक, और पैरवी न करो शैतान के कदमों की, वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (168)

वह तुम्हें हुक्म देता है सिर्फ बुराई और बेहयाई का और यह कि तुम अल्लाह (के बारे में) कहो जो तुम नहीं जानते। (169)

और जब उन्हें कहा जाता है उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने पाया अपने बाप दादा को, भला अगरचे उन के बाप दादा कुछ न समझते हों और हिदायत याफ़ता न हों। (170)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन की मिसाल उस शख्स की हालत के मानिंद है जो उस को पुकारता है जो नहीं सुनता सिवाए पुकारने और चिल्लाने (की आवाज़ के), वह बहरे, गूँगे, अंधे हैं, पस वह नहीं समझते। (171)

ऐ वह लोग जो ईमान लाए हो, तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी है और तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ उस की बन्दगी करते हो। (172)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ									
और से	लोग	जो	अपनाते हैं	से	सिवाए	अल्लाह	शरीक	मुहब्बत करते हैं उन से	
كُحِبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا									
जैसे मुहब्बत	अल्लाह	और जो लोग	ईमान लाए	सब से ज़ियादा	मुहब्बत	अल्लाह के लिए	और अगर	देख लें	वह जिन्होंने ने
إِذْ يَرُونَ الْعَذَابَ إِنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۖ وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ (165)									
जब देखेंगे	अज़ाब	कि	कुव्वत के लिए	तमाम	और यह कि	अल्लाह	सख्त	अज़ाब	165
إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوْا الْعَذَابَ									
जब बेज़ार हो जाएंगे	वह लोग जो	वह पैरवी की गई	से	जिन्होंने ने	पैरवी की	और वह देखेंगे	अज़ाब		
وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ (166) وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً									
और कट जाएंगे	उन से	वसाइल	166	और कहेंगे	वह जिन्होंने ने	पैरवी की	काश कि	हमारे लिए	दोबारा
فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ									
तो हम बेज़ारी करते	उन से	जैसे	उन्होंने ने बेज़ारी की	हम से	उसी तरह	उन्हें दिखाएगा	अल्लाह	उन के अमल	
حَسَرَتْ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ (167) يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا									
हसरतें	उन पर	और नहीं वह	निकलने वाले	आग से	167	ऐ	लोग	तुम खाओ	
مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ									
उस से जो	ज़मीन में	हलाल	पाक	और न	पैरवी करो	कदमों	शैतान		
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ (168) إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنَّ									
वेशक वह	तुम्हारा	दुश्मन	खुला	168	सिर्फ	तुम्हें हुक्म देता है	बुराई	और बेहयाई	और यह कि
تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ (169) وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا									
तुम कहो	अल्लाह पर	जो नहीं	तुम जानते	169	और जब	कहा जाता है	उन्हें	पैरवी करो	
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ									
जो उतारा	अल्लाह	वह कहते हैं	वह कि हम पैरवी करेंगे	जो हम ने पाया	उस पर	अपने बाप दादा	भला अगरचे	हों	
أَبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ (170) وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا									
उन के बाप दादा	न समझते हों	कुछ	और न हिदायत याफ़ता हों	170	और मिसाल	जिन लोगों ने कुफ़ किया			
كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ									
मानिंद हालत	वह जो	पुकारता है	उस को जो	नहीं सुनता	सिवाए	पुकारना	और आवाज़	वहरे	गूँगे
عُمًى فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ (171) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ									
अंधे	पस वह	नहीं समझते	171	ऐ	जो लोग	ईमान लाए	तुम खाओ	से	पाक
مَا رَزَقْنَكُمْ وَأَشْكُرُوا لِلَّهِ إِنَّ كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ (172)									
जो हम ने तुम्हें दिया	और शुक्र करो	अल्लाह का	अगर तुम हो	सिर्फ उस की	बन्दगी करते हो	172			



إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالْدَّمَ وَلَحْمَ الْخَنِزِيرِ وَمَا أُهْلَ بِهِ									
उस पर	पुकारा गया	और जो	सुव्वर	और गोशत	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम किया	दर हकीकत
لِغَيْرِ اللَّهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	उस पर	गुनाह	तो नहीं	हद से बढ़ने वाला	और न	न सरकशी करने वाला	लाचार हो जाए	पस जो	अल्लाह के सिवा
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٧٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ									
किताब	से	अल्लाह	जो उतारा	छुपाते हैं	जो लोग	वेशक	173	रहम करने वाला	बख्शने वाला
وَيَسْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ									
अपने पेटों	में	नहीं खाते	यही लोग	थोड़ी	कीमत	उस से	और वसूल करते हैं		
إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ									
अज़ाब	और उन के लिए	पाक करेगा उन्हें	और न	कियामत के दिन	अल्लाह	बात करेगा	और न	आग	मगर (सिर्फ)
أَلِيمٌ ﴿١٧٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالََةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابِ									
और अज़ाब	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्होंने ने	यही लोग	174	दर्दनाक		
بِالْمَغْفِرَةِ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَلَ									
नाज़िल की	अल्लाह	इस लिए कि	यह	175	आग	पर	बहुत सवर करने वाले वह	सो किस क़द्र	मग़फ़िरत के बदले
الْكِتَابِ بِالْحَقِّ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي									
में	किताब	में	इख़तिलाफ़ किया	जो लोग	और वेशक	हक़ के साथ	किताब		
شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿١٧٦﴾ لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُولُوا وَجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ									
मशरिफ़	तरफ़	अपने मुँह	तुम कर लो	कि	नेकी	नहीं	176	दूर	ज़िद
وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ									
और फ़रिश्ते	आख़िरत	और दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो	नेकी	और लेकिन	और मगरिब	
وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّنَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ									
रिशतेदार	उस की मुहब्बत पर	माल	और दे	और नबियों	और किताब				
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ									
और गर्दनों में	और सवाल करने वाले	और मुसाफ़िर	और मस्कीन (जमा)	और यतीम (जमा)					
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ									
अपने अ़हद	और पूरा करने वाले	ज़कात	और अदा करे	नमाज़	और काइम करे				
إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالصَّرَآءِ وَحِينَ الْبَأْسِ									
जंग	और वक़्त	और तकलीफ़	सख़्ती	में	और सवर करने वाले	वह अ़हद करें	जब		
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾									
177	परहेज़गार	वह	और यही लोग	उन्होंने ने सच कहा	वह जो कि	यही लोग			

दर हकीकत (हम ने) तुम पर हराम किया है मुर्दार और खून और सुव्वर का गोशत और जिस पर अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम) पुकारा गया, पस जो लाचार हो जाए मगर न सरकशी करने वाला हो न हद से बढ़ने वाला तो उस पर कोई गुनाह नहीं, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (173)

वेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने (बसूरत) किताब नाज़िल किया और उस से वसूल करते हैं थोड़ी कीमत, यही लोग हैं जो अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं और उन से बात नहीं करेगा अल्लाह कियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (174)

यही लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, और मग़फ़िरत के बदले अज़ाब, सो किस क़द्र ज़यादा वह आग पर सवर करने वाले हैं। (175)

यह इस लिए कि अल्लाह ने हक़ के साथ किताब नाज़िल की, और वेशक जिन लोगों ने किताब में इख़तिलाफ़ किया वह ज़िद में दूर (जा पड़े हैं)। (176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुँह मशरिफ़ या मगरिब की तरफ़ कर लो, मगर नेकी यह है जो ईमान लाए अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर और फ़रिशतों और किताबों पर और नबियों पर, और उस (अल्लाह) की मुहब्बत पर माल दे रिशतेदारों को और यतीमों और मस्कीनों को और मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के आज़ाद कराने में, और नमाज़ काइम करे और ज़कात अदा करे, और जब वह अहद करें तो उसे पूरा करें, और सवर करने वाले सख़्ती में और तकलीफ़ में और जंग के वक़्त, यही लोग सच्चे हैं, और यही लोग परहेज़गार हैं। (177)

ऐ ईमान वालो! तुम पर फर्ज किया गया किास मकतूलों (के बारे) में, आज़ाद के बदले आज़ाद, और गुलाम के बदले गुलाम, और औरत के बदले औरत, पस जिसे उस के भाई की तरफ से कुछ मुआफ़ किया जाए तो दस्तूर के मुताबिक़ पैरवी करे, और उसे अच्छे तरीके से अदा करे, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आसानी और रहमत है, पस जिस ने उस के बाद ज़ियादती की तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (178)

और तुम्हारे लिए किास में ज़िन्दगी है, ऐ अक़ल वालो! ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (179)

तुम पर फर्ज किया गया है कि जब तुम में से किसी को मौत आए, अगर वह माल छोड़े तो वसीयत करे माँ बाप के लिए और रिशतेदारों के लिए दस्तूर के मुताबिक़, यह लाज़िम है परहेज़गारों पर। (180)

फिर जो कोई उसे बदल दे उस के बाद कि उस ने उस को सुना तो उस का गुनाह सिर्फ़ उन लोगों पर है जिन्होंने उसे बदला, बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (181)

पस जो कोई वसीयत करने वाले से तरफ़दारी या गुनाह का ख़ौफ़ करे फिर सुलह करा दे उन के दरमियान तो उस में कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़शने वाला रहम करने वाला है। (182)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! तुम पर रोज़े फर्ज किए गए हैं जैसे तुम से पहले लोगों पर फर्ज किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (183)

गिनती के चन्द दिन हैं, पस तुम में से जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो गिनती पूरी करे बाद के दिनों में, और उन पर है जो ताक़त रखते हैं एक नादार को खाना खिलाना, पस जो खुशी से कोई नेकी करे वह उस के लिए बेहतर है, और अगर तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (184)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ											
ऐ		वह लोग जो		ईमान लाए		फर्ज किया गया तुम पर		किसास		मकतूलों में	
الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَى بِالْأُنْثَى فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتَّبَاعُ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ											
आज़ाद		आज़ाद के बदले		और गुलाम		गुलाम के बदले		और औरत		औरत के बदले	
अज़ाद		अच्छा तरीका		उसे		और अदा करना		यह		आसानी	
مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ (178)											
से		तुम्हारा रब		और रहमत		पस जो		ज़ियादती की		उस बाद	
उस के लिए		अज़ाब		दर्दनाक		178					
وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَّأُولَى الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ (179)											
और तुम्हारे लिए		में		किसास		ज़िन्दगी		ऐ अक़ल वालो		ताकि तुम	
परहेज़गार हो जाओ		179									
كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِن تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ											
फर्ज किया गया तुम पर		जब		आए		तुम्हारा कोई		मौत		अगर	
वसीयत		छोड़ा		माल		वसीयत					
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ (180)											
माँ बाप के लिए		और रिशतेदारों		दस्तूर के मुताबिक		लाज़िम		पर		परहेज़गार	
180											
فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ											
फिर जो		बदल दे उसे		बाद जो		उस को सुना		तो सिर्फ		उस का गुनाह	
उसे बदला		जो लोग		पर							
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (181) فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوَصٍّ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا											
बेशक अल्लाह		सुनने वाला		जानने वाला		181		पस जो		खौफ़ करे	
से		वसीयत करने वाला		तरफ़दारी		या गुनाह					
فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (182)											
फिर सुलह करा दे		उन के दरमियान		तो नहीं गुनाह		उस पर		बेशक अल्लाह		बख़शने वाला	
रहम करने वाला		182									
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ											
ऐ		वह लोग जो		ईमान लाए		फर्ज किए गए		तुम पर		रोज़े	
जैसे		फर्ज किए गए		पर		जो लोग					
مِّن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ (183) أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ فَمَن كَانَ											
तुम से पहले		ताकि तुम		परहेज़गार बन जाओ		183		चन्द दिन		गिनती के	
पस जो		हो									
مِّنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ											
तुम में से		बीमार		या		पर		सफ़र		तो गिनती	
से		दूसरे (बाद) के दिन		से		रोज़े					
يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا											
ताक़त रखते हों		बदला		खाना		नादार		पस जो		खुशी से करे	
कोई नेकी											
فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ (184)											
तो वह		बेहतर उस के लिए		और अगर		तुम रोज़ा रखो		बेहतर तुम्हारे लिए		अगर	
तुम हो		जानते हो		184							

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ							
महीना	रमज़ान	जिस	नाज़िल किया गया	उस में	कुरआन	हिदायत	लोगों के लिए
وَبَيَّنْتُ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ ۖ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ							
और रौशन दलीलें	से	हिदायत	और फुरकान	पस जो	पाए	तुम में से	महीना
فَلْيُصِمُ ۖ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ							
चाहिए कि रोज़े रखे	और जो	हो	बीमार	या	पर	सफ़र	तो गिनती पूरी करले
बाद के दिन	से						
يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ							
चाहता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए	आसानी	और नहीं चाहता	तुम्हारे लिए	दुश्वारी	और ताकि तुम पूरी करो
गिनती							
وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدٰكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾ وَإِذَا سَأَلَكَ							
और ताकि तुम बड़ाई करो	अल्लाह	पर	जो तुम्हें हिदायत दी	और ताकि तुम	शुक्र अदा करो	185	और जब
आप से पूछें							
عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ							
मेरे बन्दे	मेरे बारे में	तो मैं	करीब	मैं कुबूल करता हूँ	दुआ	पुकारने वाला	जब
मुझ से मांगें							
فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾							
पस चाहिए हुकम मानें	मेरा	और ईमान लाएं	मुझ पर	ताकि वह	वह हिदायत पाएं	186	
أَحَلَّ لَكُم لَيْلَةَ الصَّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ							
जाइज़ कर दिया गया	तुम्हारे लिए	रात	रोज़ा	वेपर्दा होना	तरफ़ (से)	अपनी औरतें	वह
لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ							
लिबास	तुम्हारे लिए	और तुम	लिबास	उन के लिए	जान लिया अल्लाह	कि तुम	तुम थे
تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْآنَ							
ख़ियानत करते	अपने तई	सो मुआफ़ कर दिया	तुम को	और	तुम से	पस अब	
بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ							
उन से मिलो	और तलब करो	जो	लिख दिया अल्लाह	तुम्हारे लिए	और खाओ	और पियो	यहां तक कि
يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۚ							
वाज़ेह हो जाए	तुम्हारे लिए	धारी	सफ़ेद	से	धारी	सियाह	से
फ़ज़र							
ثُمَّ أَتَمُّوا الصَّيَامَ إِلَى الْيَلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ							
फिर	तुम पूरा करो	रोज़ा	तक	रात	और न	उन से मिलो	जबकि तुम
عَكْفُونَ فِي الْمَسْجِدِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرُبُوهَا ۚ							
एतिकाफ़ करने वाले	मसजिदों में	यह	हदें	अल्लाह	पस न	उन के करीब जाओ	
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لِنَاسٍ لِّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾							
इसी तरह	वाज़ेह करता है	अल्लाह	अपने हुकम	लोगों के लिए	ताकि वह	परहेज़गार हो जाएं	187

रमज़ान का महीना है जिस में कुरआन नाज़िल किया गया, कुरआन लोगों के लिए हिदायत है, और हिदायत की रौशन दलीलें, और फुरकान (हक़ को वातिल से जुदा करने वाला), पस जो तुम में से यह महीना पाए उसे चाहिए कि रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र पर हो वह बाद के दिनों में गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और दुश्वारी नहीं चाहता, और ताकि तुम गिनती पूरी करो और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो उस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत दी, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। (185)

और जब मेरे बन्दे आप (स) से मेरे मुतअल्लिक़ पूछें तो मैं करीब हूँ, मैं कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की दुआ जब वह मुझ से मांगें, पस चाहिए कि वह मेरा हुकम मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं। (186)

तुम्हारे लिए जाइज़ कर दिया गया रोज़े की रात में अपनी औरतों से वेपर्दा होना, वह तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उन के लिए लिबास हो, अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने तई ख़ियानत करते थे सो उस ने तुम को मुआफ़ कर दिया और तुम से दरगुज़र की, पस अब उन से मिलो और जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है तलब करो, और खाओ और पियो यहां तक कि वाज़ेह हो जाए तुम्हारे लिए फ़ज़र की सफ़ेद धारी सियाह धारी से, फिर तुम रात तक रोज़ा पूरा करो, और उन से न मिलो जब तुम मोतकिफ़ हो मसजिदों में (हालते एतिकाफ़ में), यह अल्लाह की हदें हैं, पस उन के करीब न जाओ, इसी तरह वाज़ेह करता है अल्लाह लोगों के लिए अपने हुकम ताकि वह परहेज़गार हो जाएं। (187)

और अपने माल आपस में न खाओ नाहक, और उस से हाकिमों तक (रिश्वत) न पहुँचाओ ताकि तुम लोगों के माल से कोई हिस्सा खाओ गुनाह से (नाजाइज़ तौर पर) और तुम जानते हो। (188)

और आप (स) से नए चाँद के बारे में पूछते हैं? आप कह दें यह (पैमाना-ए-) औकात लोगों और हज के लिए है, और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ उन की पुश्त से, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गारी करे, और घरों में उन के दरवाज़ों से आओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाबी हासिल करो। (189)

और तुम अल्लाह के रास्ते में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और ज़ियादती न करो, बेशक अल्लाह ज़ियादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता! (190)

और उन्हें मार डालो जहाँ उन्हें पाओ और उन्हें निकाल दो जहाँ से उन्होंने ने तुम्हें निकाला, और फ़ित्ना क़त्ल से ज़ियादा संगीन है, और उन से मसज़िदे हराम (ख़ानाए क़़वा) के पास न लड़ो यहाँ तक कि वह यहाँ तुम से लड़ें, पस अगर वह तुम से लड़ें तो तुम उन से लड़ो, इसी तरह सज़ा है काफ़िरों की! (191)

फिर अगर वह वाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह बख़शने वाला रहम करने वाला है। (192)

और तुम उन से लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, पस अगर वह वाज़ आ जाएं तो नहीं (किसी पर) ज़ियादती सिवाए ज़ालिमों के। (193)

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا						
और न	खाओ	अपने माल	आपस में	नाहक	और (न) पहुँचाओ	उस से
إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ						
हाकिमों तक	ताकि तुम खाओ	कोई हिस्सा	से	माल	लोग	
بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْهَلَّةِ						
गुनाह से	और तुम	जानते हो	188	वह आप से पूछते हैं	से	नए चाँद
قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ						
आप कह दें	यह	औकात	लोगों के लिए	और हज	और नहीं	नेकी
تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى						
तुम आओ	घर (जमा)	से	उन की पुश्त	और लेकिन	नेकी	जो
وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ						
और तुम आओ	घर (जमा)	से	दरवाज़े	और तुम डरो	अल्लाह	ताकि तुम
تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ						
कामयाबी हासिल करो	189	और तुम लड़ो	में	रास्ता	अल्लाह	वह जो कि
يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾						
तुम से लड़ते हैं	और ज़ियादती न करो	बेशक अल्लाह	नहीं पसन्द करता	ज़ियादती करने वाले	190	
وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِّنْ						
और उन्हें मार डालो	जहाँ	तुम उन्हें पाओ	और उन्हें निकाल दो	से		
حَيْثُ أَخْرَجْتُمُوهُمْ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ						
जहाँ	उन्होंने ने तुम्हें निकाला	और फ़ित्ना	ज़ियादा संगीन	से	क़त्ल	
وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى يُقَتِّلُوكُمْ						
और न	उन से लड़ो	पास	मसज़िदे हराम (ख़ानाए क़़वा)	यहाँ तक कि	वह तुम से लड़ें	
فِيهِ فَإِنْ قَتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ كَذَلِكَ جَزَاءُ						
उस में	पस अगर	वह तुम से लड़ें	तो तुम उन से लड़ो	इसी तरह	बदला	
الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾ فَإِنْ أَنْتَهُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾						
काफ़िर (जमा)	191	फिर अगर	वह वाज़ आ जाएं	तो बेशक	अल्लाह	रहम करने वाला
وَقَتِّلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ						
और तुम उन से लड़ो	यहाँ तक कि	न रहे	कोई फ़ित्ना	और हो जाए	दीन	
لِلَّهِ فَإِنْ أَنْتَهُوا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾						
अल्लाह के लिए	पस अगर	वह वाज़ आ जाएं	तो नहीं	ज़ियादती	सिवाए	पर



الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتِ قِصَاصٌ فَمَنْ اعْتَدَى									
ज़ियादती की	पस जिस	वदला	और हुर्मतें	वदला हुर्मत वाला महीना			हुर्मत वाला महीना		
عَلَيْكُمْ فَأَعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ									
तुम पर		उस ने ज़ियादती की	जो	जैसी	उस पर	तो तुम ज़ियादती करो		तुम पर	
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩٤﴾ وَأَنْفِقُوا فِي									
में	और तुम खर्च करो	194	परहेज़गारों	साथ	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا									
और नेकी करो		हलाकत	तरफ़	अपने हाथ		डालो	और न	अल्लाह	रास्ता
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٩٥﴾ وَاتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ									
अल्लाह के लिए	और उमरा	हज	और पूरा करो	195	नेकी करने वाले		दोस्त रखता है	वेशक अल्लाह	
فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّى									
यहां तक	अपने सर	मुंडवाओ	और न	कुरबानी	से	मयस्सर आए	तो जो	तुम रोक दिए जाओ	फिर अगर
يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى									
तकलीफ	उस के	या	बीमार	तुम में से	हो	पस जो	अपनी जगह	कुरबानी	पहुँच जाए
مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسْكَ فَإِذَا أَمِنْتُمْ									
तुम अमन में हो	फिर जब	कुरबानी	या	सदका	या	रोज़ा	से	तो वदला	उस का सर
فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ									
कुरबानी से		मयस्सर आए	तो जो	हज	तक	उमरे का		फाइदा उठाए	तो जो
فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ									
जब तुम वापस आजाओ		और सात	हज में		दिन	तीन	तो रोज़ा रखे	न पाए	फिर जो
تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ذَلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي									
मौजूद		उस के घर वाले	न हों		लिए-जो	यह	पूरे	दस	यह
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾									
196		अज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	मस्जिदे हुराम
الْحَجَّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَةٌ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ									
और न गाली दे		वेपर्दा हो	तो न	हज	उन में	लाज़िम कर लिया	पस जिस ने	मालूम (मुक़र्रर)	महीने
وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمُهُ اللَّهُ وَتَزَوَّدُوا									
और तुम ज़ादेराह ले लिया करो		अल्लाह	उसे जानता है	नेकी से		तुम करोगे	और जो	हज में	और न झगड़ा
فَإِنَّ خَيْرَ الرِّزَادِ التَّقْوَى وَاتَّقُونِ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾									
197		ऐ अक़ल वालो		और मुझ से डरो		तक़वा	ज़ादे राह	वेहतर	पस वेशक

हुर्मत वाला महीना बदला है हुर्मत वाले महीने का, और हुर्मतों का बदला है, पस जिस ने तुम पर ज़ियादती की तो तुम उस पर ज़ियादती करो जैसी उस ने तुम पर ज़ियादती की, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह साथ है परहेज़गारों के। (194)

और अल्लाह की राह में खर्च करो और (अपने आप को) अपने हाथों न डालो हलाकत में, और नेकी करो, वेशक अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (195)

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए, फिर अगर तुम रोक दिए जाओ तो जो कुरबानी मयस्सर आए (पेश करो) और अपने सर न मुंडवाओ यहां तक कि कुरबानी अपनी जगह पहुँच जाए, फिर जो कोई तुम में से बीमार हो या उस के सर में तकलीफ हो तो वह वदला दे रोज़े से या सदक़े से या कुरबानी से, फिर जब तुम अमन में हो तो जो फाइदा उठाए हज के साथ उमरा (मिला कर) तो उसे जो कुरबानी मयस्सर आए (देदे), फिर जो न पाए तो वह रोज़े रख ले तीन दिन हज के अय्याम में और सात जब तुम वापस आजाओ, यह दस पूरे हुए, यह उस के लिए है जिस के घर वाले मस्जिदे हराम में मौजूद न हों (न रहते हों) और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख्त अज़ाब देने वाला है। (196)

हज के महीने मुक़र्रर हैं, पस जिस ने उन में हज लाज़िम कर लिया तो वह न वेपर्दा हो, न गाली दे, न झगड़ा करे हज में, और तुम जो नेकी करोगे अल्लाह उसे जानता है, और तुम ज़ादेराह ले लिया करो, पस वेशक बेहतर ज़ादे राह तक़वा है, और ऐ अक़ल वालो! मुझ से डरते रहो। (197)

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम अपने रब का फज़ल तलाश करो (तिजारत करो), फिर जब तुम अरफ़ात से लौटो तो अल्लाह को याद करो मशअरे हराम के नज़दीक (मुज़दलिफ़ा में), और अल्लाह को याद करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत दी और वेशक उस से पहले तुम नावाकिफ़ों में से थे। (198)

फिर तुम लौटो जहां से लोग लौटें, और अल्लाह से मग़फ़िरत चाहो, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (199)

फिर जब तुम हज के मरासिम अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसा कि तुम अपने बाप दादा को याद करते थे या उस से भी ज़ियादा याद करो, पस कोई आदमी कहता है ऐ हमारे रब! हमें दुन्या में (भलाई) दे और उस के लिए नहीं है आख़िरत में कुछ हिस्सा। (200)

और उन में से कोई कहता है ऐ हमारे रब! हमें दे दुन्या में भलाई और आख़िरत में भलाई, और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले। (201)

यही लोग हैं उन के लिए हिस्सा है उस में से जो उन्होंने ने कमाया, और अल्लाह हिसाब लेने में तेज़ है। (202)

और तुम अल्लाह को याद करो गिनती के चन्द (मुकर्रर) दिनों में, पस जो दो दिन में जल्दी चला गया तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिस ने ताख़ीर की उस पर कोई गुनाह नहीं (यह उस के लिए है) जो डरता रहा, और तुम अल्लाह से डरो, और जान लो कि तुम उस की तरफ़ जमा किए जाओगे। (203)

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ							
अपना रब	से	फ़ज़ल	तलाश करो	अगर तुम	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं
فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِّنْ عَرَفَتٍ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ							
नज़दीक	अल्लाह	तो याद करो	अ़रफ़ात	से	तुम लौटो	फिर जब	
الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَأَذْكُرُوهُ كَمَا هَدَيْتُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ							
तुम थे	और वेशक	उस ने तुम्हें हिदायत दी	जैसे	और उसे याद करो	मशअरे हराम		
مِّن قَبْلِهِ لَمَنِ الضَّالِّينَ ﴿١٩٨﴾ ثُمَّ أَفِيضُوا مِّنْ حَيْثُ							
से - जहां	तुम लौटो	फिर	198	नावाकिफ़	ज़रूर - से	उस से पहले	
أَفَاصَ النَّاسِ وَأَسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ							
अल्लाह	वेशक	अल्लाह	और मग़फ़िरत चाहो		लोग	लौटें	
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٩﴾ فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ							
हज के मरासिम		तुम अदा कर चुको	फिर जब	199	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	
فَأَذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا							
याद	ज़ियादा	या	अपने बाप दादा	जैसी तुम्हारी याद	अल्लाह	तो याद करो	
فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا							
दुन्या	में	हमें दे	ऐ हमारे रब	कहता है	जो	पस - से - आदमी	
وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَقٍ ﴿٢٠٠﴾ وَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ							
कहता है	जो	और उन से	200	कुछ हिस्सा	आख़िरत	में	उस के लिए और नहीं
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً							
भलाई	और आख़िरत में		भलाई	दुन्या में	हमें दे	ऐ हमारे रब	
وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا							
उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	उन के लिए	यही लोग	201	आग (दोज़ख़)	और हमें बचा
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾ وَأَذْكُرُوا اللَّهَ فِي							
में	अल्लाह	और तुम याद करो	202	हिसाब लेने वाला	तेज़	और अल्लाह	
أَيَّامٍ مَّعْدُودَتٍ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ							
गुनाह	तो नहीं	दो दिन	में	जल्द चला गया	पस जो	दिन गिनती के	
عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ لِمَنِ اتَّقَىٰ							
डरता रहा	लिए - जो	उस पर	गुनाह	तो नहीं	ताख़ीर की	और जिस	उस पर
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾							
203	जमा किए जाओगे	उस की तरफ़	कि तुम	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ									
और वह गवाह बनाता है अल्लाह को	दुन्या	ज़िन्दगी	में	उस की बात	तुम्हे भली मालूम होती है	जो	लोग	और से	
عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ ۖ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَإِذَا تَوَلَّى سَعَىٰ									
दौड़ता फिरे	वह लौटे	और जब	204	झगड़ालू	सख्त	हालांकि वह	उस के दिल में	जो	पर
فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ									
और नस्ल	खेती	और तबाह करे	उस में	ताकि फ़साद करे	ज़मीन	में			
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ									
अल्लाह	डर	उस को	कहा जाए	और जब	205	फ़साद	न पसन्द करता है	और अल्लाह	
أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾									
उसे आमादा करे	इज़्ज़त (गुरुर)	गुनाह पर	तो काफ़ी है उस को	जहन्नम	और अलवत्ता बुरा	ठिकाना	206		
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ									
और से	लोग	जो	बेच डालता है	अपनी जान	हासिल करना	अल्लाह की रज़ा			
وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا									
और अल्लाह	मेहरबान	बन्दों पर	207	ऐ	जो लोग ईमान लाए	तुम दाखिल हो जाओ			
فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ									
में	इस्लाम	पूरे पूरे	और न	पैरवी करो	क़दम	शैतान			
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٨﴾ فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ									
वेशक वह	तुम्हारा	दुश्मन	खुला	208	फिर अगर	तुम डगमगा गए	उस के बाद		
مَا جَاءَتْكُمْ الْبَيِّنَاتُ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٠٩﴾									
जो	तुम्हारे पास आए	वाज़ेह अहकाम	तो जान लो	कि	अल्लाह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	209	
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ									
क्या	वह इन्तिज़ार करते हैं	सिवाए (यही)	कि	आए उन के पास	अल्लाह	सायबानों में			
مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ									
से	बादल	और फ़रिश्ते	और चुका दिया जाए	मुआमला					
وَالَى اللَّهُ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِي إِسْرَءِيلَ									
और तरफ़	अल्लाह	लौटेंगे	तमाम मुआमलात	210	पूछो	बनी इस्राईल			
كَمْ اتَيْنَهُم مِّنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۖ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ									
किस क़दर	हम ने उन्हें दी	से	निशानियाँ	खुली	और जो	बदल डाले	नेमत	अल्लाह	
مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾									
उस के बाद	जो	आई उस के पास	तो बेशक	अल्लाह	सख्त	अज़ाब	211		

और लोगों में (कोई ऐसा भी है) कि उस की बात तुम्हें भली मालूम होती है दुनयवी ज़िन्दगी (के उमूर) में और वह अल्लाह को गवाह बनाता है अपने दिल की बात पर, हालांकि वह सख्त झगड़ालू है। (204)

और जब वह लौटे तो ज़मीन (मुल्क) में दौड़ता फिरे ताकि उस में फ़साद करे, और तबाह करे खेती और नस्ल, और अल्लाह फ़साद को नापसंद करता है। (205)

और जब उस को कहा जाए कि अल्लाह से डर, तो उस को इज़्ज़त (गुरुर) गुनाह पर आमादा करे, तो उस के लिए जहन्नम काफ़ी है, और अलवत्ता वह बुरा ठिकाना है। (206)

और लोगों में (एक वह है) जो अपनी जान बेच डालता है अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है। (207)

ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ, और शैतान के कदमों की पैरवी न करो, वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208)

फिर अगर तुम उस के बाद डगमगा गए जबकि तुम्हारे पास वाज़ेह अहकाम आ गए तो जान लो कि अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (209)

क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि अल्लाह उन के पास आए सायबानों में बादल के, और फ़रिश्ते, और मुआमला चुका दिया जाए, और तमाम मुआमलात अल्लाह की तरफ़ लौटेंगे। (210)

पूछो बनी इस्राईल से हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दीं? और जो अल्लाह की नेमत बदल डाले उस के बाद कि वह उस के पास आ गई तो वेशक अल्लाह सख्त अज़ाब देने वाला है। (211)

आरास्ता की गई काफ़िरों के लिए दुन्या की ज़िन्दगी, और वह हँसते हैं उन पर जो ईमान लाए, और जो परहेज़गार हुए वह क़यामत के दिन उन से बालातर होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क देता है वेशुमार। (212)

लोग एक उम्मत थे, फिर अल्लाह ने नबी भेजे खुशख़बरी देने वाले और डराने वाले, और उन के साथ बरहक़ किताब नाज़िल की ताकि फ़ैसला करे लोगों के दरमियान जिस में उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया, और जिन्हें (किताब) दी गई थी उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास बाज़ेह अहक़ाम आ गए आपस की ज़िद की वजह से, पस अल्लाह ने उन लोगों को हिदायत दी अपने इज़्ज़न से जो ईमान लाए उस सच्ची बात पर जिस में उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया था, और अल्लाह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़। (213)

क्या तुम ख़याल करते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और जबकि (अभी) तुम पर (ऐसी हालत) नहीं आई जैसे तुम से पहले लोगों पर गुज़री, उन्हें पहुँची सख़्ती और तकलीफ़, और वह हिला दिए गए यहां तक कि रसूल और वह जो उन के साथ ईमान लाए कहने लगे अल्लाह की मदद कब आएगी? आगाह रहो वेशक़ अल्लाह की मदद करीब है। (214)

वह आप (स) से पूछते हैं क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें जो माल तुम ख़र्च करो, सो माँ बाप के लिए और क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों के लिए, और तुम जो नेकी करोगे तो वेशक़ अल्लाह उसे जानने वाला है। (215)

رُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ						
आरास्ता की गई	वह लोग जो कुफ़ किया	जिन्दगी	दुन्या	और वह हँसते हैं	से	जो लोग
آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ						
ईमान लाए	और जो लोग	परहेज़गार हुए	उन से बालातर	क़यामत के दिन	और अल्लाह	रिज़्क देता है
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (٢١٢) كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً						
जिसे	वह चाहता है	बग़ैर	हिसाब	212	थे	लोग
एक	उम्मत	एक	उम्मत	एक	उम्मत	एक
فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنْزَلَ						
फिर भेजे	अल्लाह	नबी	खुशख़बरी देने वाले	और डराने वाले	और नाज़िल की	और नाज़िल की
مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا						
उन के साथ	किताब	बरहक़	ताकि फ़ैसला करे	दरमियान	लोग	जिस में
उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया
فِيهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ						
उस में	और नहीं	इख़्तिलाफ़ किया	उस में	मगर	जिन्हें	दी गई
बाद	बाद	बाद	बाद	बाद	बाद	बाद
مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا						
जो - जब	आए उन के पास	बाज़ेह अहक़ाम	ज़िद	उन के दरमियान (आपस की)	पस हिदायत दी	अल्लाह
जो लोग	ईमान लाए	जो लोग	ईमान लाए	जो लोग	ईमान लाए	ईमान लाए
لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِآذِنِهِ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ						
लिए - जो	उन्होंने ने इख़्तिलाफ़ किया	उस में	से (पर)	सच	अपने इज़्ज़न से	और अल्लाह
हिदायत देता है	जिसे	वह चाहता है	जिसे	वह चाहता है	जिसे	वह चाहता है
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (٢١٣) أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ						
तरफ़	रास्ता	सीधा	213	क्या	तुम ख़याल करते हो	कि
तुम दाख़िल हो जाओगे	तुम दाख़िल हो जाओगे	तुम दाख़िल हो जाओगे	तुम दाख़िल हो जाओगे	तुम दाख़िल हो जाओगे	तुम दाख़िल हो जाओगे	तुम दाख़िल हो जाओगे
وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ						
और जब कि नहीं	आई तुम पर	जैसे	जो	गुज़रे	से	तुम से पहले
مَسَّتْهُمْ الْبَأْسَاءُ وَالصَّرَاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ						
पहुँची उन्हें	सख़्ती	और तकलीफ़	और वह हिला दिए गए	यहां तक	कहने लगे	रसूल
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصُرُ اللَّهُ إِلَّا أَنْ نَصُرَ اللَّهُ						
और वह जो	ईमान लाए	उन के साथ	कब	अल्लाह की मदद	आगाह रहो	वेशक़
मदद	मदद	मदद	मदद	मदद	मदद	मदद
قَرِيبٌ (٢١٤) يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ مَا أَنْفَقْتُ مِنْ						
करीब	214	वह आप से पूछते हैं	क्या कुछ	ख़र्च करें	आप कह दें	जो
तुम ख़र्च करो	तुम ख़र्च करो	तुम ख़र्च करो	तुम ख़र्च करो	तुम ख़र्च करो	तुम ख़र्च करो	तुम ख़र्च करो
خَيْرٍ فَلِلَّوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ						
माल	सो माँ बाप के लिए	और क़राबतदार (जमा)	और यतीम (जमा)	और मोहताज (जमा)	और मोहताज (जमा)	और मोहताज (जमा)
وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ (٢١٥)						
और मुसाफ़िर	और जो	तुम करोगे	कोई नेकी	तो वेशक़	अल्लाह	उसे जानने वाला
215	215	215	215	215	215	215



٣٦  
ع  
١٠

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ وَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا								
एक चीज़	तुम नापसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	नागवार	और वह	जंग	तुम पर फर्ज की गई
وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسَى أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ								
तुम्हारे लिए	बुरी	और वह	एक चीज़	तुम पसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	बेहतर और वह
وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ								
महीना	हुर्मत वाला	से	वह आप से सवाल करते हैं	216	नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह
قِتَالٍ فِيهِ قُلٌ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ وَصَدُّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ								
अल्लाह	रास्ता	से	और रोकना	बड़ा	उस में	जंग	आप कह दें	जंग
وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ								
अल्लाह के नज़दीक	बहुत बड़ा	उस से	उस के लोग	और निकाल देना	और मस्जिद हाराम	उस का	और न मानना	
وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ								
वह तुम से लड़ेंगे	और वह हमेशा रहेंगे	कतल	से	बहुत बड़ा	और फित्ना			
حَتَّى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا وَمَنْ يَرْتَدِدْ								
फिर जाए	और जो	वह कर सकें	अगर	तुम्हारा दीन	से	तुम्हें फेर दें	यहां तक कि	
مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ								
ज़ाया हो गए	तो यही लोग	काफिर	और वह	फिर मर जाए	अपना दीन	से	तुम में से	
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ								
दोज़ख़	वाले	और यही लोग	और आखिरत	दुनिया	में	उन के अमल		
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا								
उन्होंने ने हिज़्रत की	और वह लोग जो	ईमान लाए	जो लोग	वेशक	217	हमेशा रहेंगे	उस में	वह
وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ								
अल्लाह की रहमत	उम्मीद रखते हैं	यही लोग	अल्लाह का रास्ता	में	और उन्होंने ने जिहाद किया			
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ								
और जुआ	शराब	से (बारे में)	वह पूछते हैं आप से	218	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	
قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنْفَعٌ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ								
बहुत बड़ा	और उन दोनों का गुनाह	लोगों के लिए	ओर फ़ाइदे	बड़ा	गुनाह	उन दोनों में	आप कह दें	
مِنْ نَّفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ								
ज़ाईद अज़ ज़रूरत	आप कह दें	वह खर्च करें	क्या कुछ	वह पूछते हैं आप (स) से	उन का फ़ाइदा	से		
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾								
219	गौर ओ फ़िक्र करो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह	

तुम पर जंग फर्ज की गई और वह तुम्हें नागवार है, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ नापसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ पसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (216)

वह आप से सवाल करते हैं हुर्मत वाले महीने में जंग (के बारे) में, आप (स) कह दें उस में जंग करना बड़ा (गुनाह) है, और अल्लाह के रास्ते से रोकना और उस (अल्लाह) को न मानना और मस्जिद हाराम (से रोकना) और उस के लोगों को वहां से निकालना अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है और फित्ना कतल से (भी) बड़ा गुनाह है, और वह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि अगर वह कर सकें तो तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें, और तुम में से जो फिर जाए अपने दीन से और वह मर जाए (उस हाल में कि) वह काफिर हो तो यही लोग हैं जिन के अमल ज़ाया हो गए दुनिया में और आखिरत में और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (217)

वेशक जो ईमान लाए और जिन लोगों ने हिज़्रत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, यही लोग अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (218)

वह आप (स) से पूछते हैं शराब और जुआ के बारे में, आप कह दें कि उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए फ़ाइदे (भी) हैं (लेकिन) उन का गुनाह उन के फ़ाइदे से बहुत बड़ा है, और वह आप (स) से पूछते हैं कि वह क्या कुछ खर्च करें? आप कह दें ज़ाईद अज़ ज़रूरत, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम गौर ओ फ़िक्र करो (219)

दनिया में और आखिरत में, और वह आप (स) से यतीमों के बारे में पूछते हैं, आप कह दें उन की इस्लाह बेहतर है, और अगर उन को मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह खराबी करने वाले और इस्लाह करने वाले को खूब जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को जरूर मुशक़क़त में डाल देता, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (220)

और मुशरिफ़ औरतों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान लौंडी बेहतर है मुशरिफ़ औरत से अगरचे तुम्हें वह भली लगे, और मुशरिफ़ों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान गुलाम बेहतर है मुशरिफ़ से अगरचे वह तुम्हें भला लगे, यह लोग दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं, और अल्लाह बुलाता है अपने हुक्म से जन्नत और बख़्शिश की तरफ़, और लोगों के लिए अपने अहकाम बाज़ेह करता है ताकि वह नसीहत पकड़ें। (221)

वह आप (स) से हालते हैज़ के बारे में पूछते हैं, आप कह दें कि वह गन्दगी है, पस तुम औरतों से अलग रहो हालते हैज़ में और उन के करीब न जाओ यहां तक कि वह पाक हो जाएं, पस जब वह पाक हो जाएं तो तुम उन के पास आओ जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। (222)

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, पस तुम अपनी खेती में आओ जहां से चाहो और अपने लिए आगे भेजो (आगे की तदबीर करो) और अल्लाह से डरो, और तुम जान लो कि तुम अल्लाह से मिलने वाले हो, और खुशख़बरी दें ईमान वालों को। (223)

और अपनी कस्मों के लिए अल्लाह (के नाम) को निशाना न बनाओ कि तुम हुस्ने सुलूक और परहेज़गारी और लोगो के दरमियान सुलह कराने (से बाज़ रहो) और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (224)

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (٢٢٠)							
इस्लाह	आप कह दें	यतीम (जमा)	से (बारे में)	और वह आप (स) से पूछते हैं	और आखिरत	दुनिया में	
खराबी करने वाला	जानता है	और अल्लाह	तो भाई तुम्हारे	मिला लो उन को	और अगर	बेहतर	उन की
220	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	जरूर मुशक़क़त में डालता तुम को	चाहता अल्लाह	और अगर	इस्लाह करने वाला (को)
وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَ حَتَّىٰ يُؤْمِنَ وَلَا مِمَّنْ مُؤْمِنَةٍ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ (٢٢١)							
से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता लौंडी	वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुशरिफ़ औरतें	निकाह करो और न
वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुशरिफ़ों	निकाह करो	और न	वह भली लगे तुम्हें	अगरचे	मुशरिफ़ औरत
वही लोग	वह भला लगे तुम्हें	अगरचे	मुशरिफ़	से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता गुलाम
وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ أَذًى فَأَعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ وَلَا تَقْرُبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ (٢٢٢)							
औरतें	पस तुम अलग रहो	गन्दगी	वह	आप कह दें	हालते हैज़	से (बारे में)	और वह पूछते हैं आप (स) से
तो आओ उन के पास	वह पाक हो जाएं	पस जब	वह पाक हो जाएं	यहां तक कि	करीब जाओ उन के	और न	हालते हैज़ में
और दोस्त रखता है	तौबा करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह	हुक्म दिया तुम्हें	जहां से	
जहां से	अपनी खेती	सो तुम आओ	तुम्हारी	खेती	औरतें तुम्हारी	222	पाक रहने वाले
मिलने वाले उस से	कि तुम	और तुम जान लो	अल्लाह	और डरो	अपने लिए	और आगे भेजो	तुम चाहो
कि	अपनी कस्मों के लिए	निशाना	अल्लाह	बनाओ	और न	223	ईमान वाले और खुशख़बरी दें
تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (٢٢٤)							
224	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	लोग	दरमियान	और सुलह कराओ	तुम हुस्ने सुलूक करो

२६  
११

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ							
पकड़ता है तुम्हें	और लेकिन	कस्में तुम्हारी	में	लगू (बेहूदा)	अल्लाह	नहीं पकड़ता तुम्हें	
بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ							
कस्म खाते हैं	उन लोगों के लिए जो	225	बुर्दवार	बख़्शने वाला	और अल्लाह	दिल तुम्हारे	कमाया पर-जो
مِنْ نِّسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِنْ فَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ							
तो बेशक अल्लाह	रुजूअ करलें	फिर अगर	महीने	चार	इन्तिज़ार	औरतें अपनी	से
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ							
सुनने वाला	अल्लाह	तो बेशक	तलाक़	उन्होंने ने इरादा किया	और अगर	226	रहम करने वाला बख़्शने वाला
عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ							
मुद्दते हैज़	तीन	अपने तई	इन्तिज़ार करें	और तलाक़ यापता औरतें	227	जानने वाला	
وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ							
अगर	उन के रहम (जमा)	में	अल्लाह पैदा किया	जो	वह छुपाएँ	कि उन के लिए	और जाइज़ नहीं
كُنَّ يُؤْمِنَنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ							
वापसी उन की	ज़ियादा हक़दार	और खाविन्द उन के	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखती है		
فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ							
औरतों पर (फ़र्ज़)	जो	जैसे	और औरतों के लिए	बेहतरी (हुस्ने सुलूक)	वह चाहें	अगर	उस में
بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ							
ग़ालिब	और अल्लाह	एक दर्जा	उन पर	और मर्दों के लिए	दस्तूर के मुताबिक़		
حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾ الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ							
या	दस्तूर के मुताबिक़	फिर रोक लेना	दो बार	तलाक़	228	हिक्मत वाला	
تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا مِمَّا							
उस से जो	तुम ले लो	कि	तुम्हारे लिए	जाइज़	और नहीं	हुस्ने सुलूक से	ख़सत करना
اتَّيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ							
अल्लाह कि हुदूद	काइम रख सकेंगे	कि न	दोनों अन्देशा करें	कि सिवाए	कुछ	तुम ने दिया उन को	
فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا							
उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	अल्लाह की हुदूद	कि वह काइम न रख सकेंगे	तुम डरो	फिर अगर		
فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا							
आगे बढ़ो उस से	पस न	अल्लाह की हुदूद	यह	उस का	औरत बदला दे	उस में जो	
وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٢٩﴾							
229	ज़ालिम	वह	पस वही लोग	अल्लाह की हुदूद	आगे बढ़ता है	और जो	

तुम्हें नहीं पकड़ता अल्लाह तुम्हारी बेहूदा कस्मों पर, लेकिन तुम्हें पकड़ता है उस पर जो तुम्हारे दिलों ने कमाया (इरादे से किया) और अल्लाह बख़्शने वाला, बुर्दवार है। (225)

उन लोगों के लिए जो अपनी औरतों के (पास न जाने की) कस्म खाते हैं इन्तिज़ार करना है चार माह, फिर अगर वह रुजूअ कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (226)

और अगर उन्होंने ने तलाक़ का इरादा कर लिया तो बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (227)

और तलाक़ यापता औरतें अपने तई इन्तिज़ार करें तीन हैज़ तक, और उन के लिए जाइज़ नहीं कि वह छुपाएँ जो अल्लाह ने उन के रहमों में पैदा किया अगर वह अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखती हैं, और उन के खाविन्द उन की वापसी के ज़ियादा हक़दार है उस (मुद्दत) में अगर वह बेहतरी (हुस्ने सुलूक) करना चाहें, और औरतों के लिए (हक़) है जैसे औरतों पर (मर्दों का) हक़ है दस्तूर के मुताबिक़, और मर्दों का उन पर एक दर्जा (बतरती) है और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (228)

तलाक़ दो बार है, फिर रोक लेना है दस्तूर के मुताबिक़ या ख़सत कर देना हुस्ने सुलूक से, और नहीं तुम्हारे लिए जाइज़ कि जो तुम ने उन्हें दिया है उस से कुछ वापस ले लो सिवाए उस के कि दोनों अन्देशा करें कि अल्लाह की हुदूद काइम न रख सकेंगे, फिर अगर तुम डरो कि वह दोनों अल्लाह की हुदूद काइम न रख सकेंगे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर कि औरत उस का बदला (फ़िदया) देदे, यह अल्लाह की हुदूद हैं, पस उन के आगे न बढ़ो, और जो अल्लाह की हुदूद से आगे बढ़ता है पस वही लोग ज़ालिम हैं। (229)

पस अगर उस को तलाक़ दे दी तो जाइज़ नहीं उस के लिए उस के बाद यहां तक कि वह उस के अलावा किसी (दूसरे) ख़ाबिन्द से निकाह कर ले, फिर अगर वह उसे तलाक़ देदे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर अगर वह रुज़ूअ कर लें, वशर्त यह कि वह ख़याल करें कि वह अल्लाह की हुदूद काइम रखेंगे, और यह अल्लाह की हुदूद है, वह उन्हें जानने वालों के लिए वाज़ेह करता है। (230)

और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो फिर वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन को दस्तूर के मुताबिक़ रोको या दस्तूर के मुताबिक़ रखसत कर दो और तुम उन्हें नुक़सान पहुँचाने के लिए न रोको ताकि तुम ज़ियादती करो, और जो यह करेगा वेशक़ उस ने अपने ऊपर जुल्म किया, और अल्लाह के अहक़ाम को मज़ाक़ न ठहराओ, और तुम पर जो अल्लाह की नेमत है उसे याद करो, और जो उस ने तुम पर किताब और हिक़मत उतारी, वह उस से तुम्हें नसीहत करता है, और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (231)

और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो, फिर वह पूरी कर लें अपनी इद्दत तो उन्हें अपने ख़ाबिन्दों से निकाह करने से न रोको जब वह राज़ी हों आपस में दस्तूर के मुताबिक़, यह उस को नसीहत की जाती है जो तुम में से ईमान रखता है अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा सुथरा और ज़ियादा पाकीज़ा है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (232)

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ						
वह निकाह कर ले	यहां तक कि	उस के बाद	उस के लिए	तो जाइज़ नहीं	तलाक़ दी उस को	फिर अगर
زَوْجًا غَيْرَهُ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ						
अगर	उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	तलाक़ देदे उस को	फिर अगर	उस के अलावा	खाबिन्द
يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ وَتِلْكَ						
और यह	अल्लाह की हुदूद	वह काइम रखेंगे	कि	वह खयाल करें	वशर्त यह कि	वह रुज़ूअ कर लें
حُدُودَ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ						
तुम तलाक़ दो	और जब	230	जानने वालों के लिए	उन्हें वाज़ेह करता है	अल्लाह की हुदूद	
النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ						
दस्तूर के मुताबिक़	तो रोको उन को	अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औरतें		
أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا						
नुक़सान	और तुम न रोको उन्हें	दस्तूर के मुताबिक़	रखसत कर दो	या		
لِتَعْتَدُوا وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ						
अपनी जान	तो वेशक़ उस ने जुल्म किया	यह	करेगा	और जो	ताकि तुम ज़ियादती करो	
وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوعًا وَادْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ						
अल्लाह की नेमत	और याद करो	मज़ाक़	अल्लाह के अहक़ाम	ठहराओ	और न	
عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ						
और हिक़मत	किताब	से	तुम पर	उस ने उतारा	और जो	तुम पर
يُعِظُكُمْ بِهِ وَآتُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ						
चीज़	हर	अल्लाह कि	और जान लो	अल्लाह और तुम डरो	उस से	वह नसीहत करता है तुम्हें
عَلِيمٌ ﴿٢٣١﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ						
अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औरतें	तुम तलाक़ दो	और जब	231	जानने वाला
فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا						
वह राज़ी हों	जब	खाबिन्द अपने	वह निकाह करें	कि	रोको उन्हें	तो न
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ						
हो	जो	उस से	नसीहत की जाती है	यह	दस्तूर के मुताबिक़	आपस में
مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَمِ آيَاتُ						
ज़ियादा सुथरा	यही	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान रखता	तुम में से	
لَكُمْ وَأَطِهُرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾						
232	जानते	नहीं	और तुम	जानता है	और अल्लाह	और ज़ियादा पाकीज़ा तुम्हारे लिए



وَالْوَالِدَتُ يُرْضَعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ						
चाहे	जो कोई	पूरे	दो साल	अपनी औलाद	दूध पिलाएं	और माएँ
أَنْ يُتِمَّ الرِّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ						
दस्तूर के मुताबिक	और उन का लिबास	उन का खाना	जिस का बच्चा (बाप)	और पर	दूध पिलाने कि मुद्दत	कि वह पूरी करे
لَا تُكَلِّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ						
जिस का बच्चा (बाप)	और न	उस के बच्चे के सबब	माँ	न नुकसान पहुँचाया जाए	उस की वुस्अत	कोई शख्स नहीं तक्लीफ दी जाती
بِوَلَدِهِ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ						
आपस की रज़ामन्दी से	दूध छुड़ाना	दोनों चाहें	फिर अगर	यह-उस	ऐसा	वारिस और पर
مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ						
कि	तुम चाहो	और अगर	उन दोनों पर	गुनाह	तो नहीं	और बाहम मशवरा दोनों से
تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ						
तुम ने दिया था	जो	तुम हवाले कर दो	जब	तुम पर	तो गुनाह नहीं	अपनी औलाद तुम दूध पिलाओ
بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (२३३)						
233	देखने वाला	तुम करते हो	से-जो	अल्लाह	कि	और जान लो
وَالَّذِينَ يُتَوَقَّفُونَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ						
अपने आप को	वह इन्तिज़ार में रखें	बीवियाँ	और छोड़ जाएँ	तुम से	वफात पा जाएँ	और जो लोग
أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ						
तुम पर	तो नहीं गुनाह	अपनी मुद्दत (इद्दत)	वह पहुँच जाएँ	फिर जब	और दस (दिन)	महीने चार
فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (२३४)						
234	वाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	दस्तूर के मुताबिक	अपनी जानें (अपने हक)	में वह करें में-जो
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنُتُمْ						
तुम छुपाओ	या	औरतों को	पैग़ामे निकाह	उस से	इशारे में	में-जो तुम पर और नहीं गुनाह
فِي أَنْفُسِكُمْ عِلْمَ اللَّهِ أَنْكُمْ سَتَذَكَّرُوْنَهُنَّ وَلَكِنْ لَا تُؤَاعِدُوْهُنَّ						
न वादा करो उन से	और लेकिन	जल्द ज़िक्र करोगे उन से	कि तुम	जानता है अल्लाह	अपने दिलों में	
سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَّعْرُوفًا وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ						
निकाह	गिरह	इरादा करो	और न	दस्तूर के मुताबिक	बात तुम कहो	मगर यह कि छुप कर
حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتْبُ أَجَلَهُ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي						
में	जो	जानता है	अल्लाह	कि	और जान लो	उस की मुद्दत इद्दत पहुँच जाए यहाँ तक
أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ (२३५)						
235	तहम्मुल वाला	बख़शने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो	सो डरो उस से अपने दिल

और माएँ अपनी औलाद को पूरे दो साल दूध पिलाएँ जो कोई दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे, और उन (माओं) का खाना और उन का लिबास बाप पर (वाजिब है) दस्तूर के मुताबिक, और किसी को तक्लीफ नहीं दी जाती मगर उस की वुस्अत (बरदाशत) के मुताबिक, माँ को नुकसान न पहुँचाया जाए उस के बच्चे के सबब और न बाप को उस के बच्चे के सबब, और वारिस पर भी ऐसा ही (वाजिब) है, फिर अगर वह दोनों दूध छुड़ाना चाहें आपस की रज़ामन्दी और मशवरे से तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम चाहो कि अपनी औलाद को दूध पिलाओ (गैर औरत से) तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जब तुम दस्तूर के मुताबिक (उन के) हवाले कर दो जो तुम ने देना ठहराया था, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे देखने वाला है। (233)

और तुम में से जो लोग वफात पा जाएँ और छोड़ जाएँ बीवियाँ, वह (वेवाएँ) अपने आप को इन्तिज़ार में रखें चार माह दस दिन, फिर जब वह अपनी मुद्दत को पहुँच जाएँ (इद्दत पूरी कर लें) तो उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने हक में करें दस्तूर के मुताबिक, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से वाख़बर है। (234)

और तुम पर उस में कोई गुनाह नहीं कि तुम औरतों को इशारे कनाए में निकाह का पैग़ाम दो या अपने दिलों में छुपाओ, अल्लाह जानता है तुम जल्द उन से ज़िक्र कर दोगे, लेकिन उन से छुप कर (निकाह का) वादा न करो, मगर यह कि तुम दस्तूर के मुताबिक बात करो, और निकाह की गिरह बाँधने का इरादा न करो यहाँ तक कि इद्दत अपनी मुद्दत तक पहुँच जाए, और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह जानता है, सो तुम उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बख़शने वाला, तहम्मुल वाला है। (235)

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम औरतों को तलाक़ दो जब कि तुम ने उन्हें हाथ न लगाया हो या उन के लिए मेहर मुकर्रर न किया हो, और उन्हें खर्च दो, खुशहाल पर उस की हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त पर उस की हैसियत के मुताबिक़, खर्च दस्तूर के मुताबिक़ (देना) नेकोकारों पर लाज़िम है। (236)

और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो इस से पहले कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और उन के लिए तुम मेहर मुकर्रर कर चुके हो तो उस का निस्फ़ (दे दो) जो तुम ने मुकर्रर किया सिवाए उस के कि वह मुआफ़ कर दें या वह मुआफ़ कर दे जिस के हाथ में अक़दे निकाह है, और अगर तुम मुआफ़ कर दो तो यह परहेज़गारी के करीब तर है, और बाहम एहसान करना न भूलो, वेशक़ जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (237)

तुम नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो (खुसूसन) दरमियानी नमाज़ की और अल्लाह के लिए फ़रमांवरदार (बन कर) खड़े रहो। (238)

फिर अगर तुम्हें डर हो तो प्यादापा या सवार (अदा करो), फिर जब अमन पाओ तो अल्लाह को याद करो जैसा कि उस ने तुम्हें सिखाया है जो तुम न थे जानते। (239)

और जो लोग तुम में से वफ़ात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो अपनी बीवियों के लिए एक साल तक नान नफ़का की वसीयत करें निकाले बग़ैर, फिर अगर वह खुद निकल जाएं तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने तई दस्तूर के मुताबिक़ करें, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (240)

और मुतल्लका औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक़ नान नफ़का लाज़िम है परहेज़गारों पर। (241)

इसी तरह तुम्हारे लिए अल्लाह अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (242)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ أَوْ							
या	तुम ने उन्हें हाथ लगाया	जो न	औरतें	तुम तलाक़ दो	अगर	तुम पर	नहीं गुनाह
تَفَرِّضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۖ وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى الْمَوْسِعِ قَدَرُهُ							
उस की हैसियत	खुशहाल	पर	और उन्हें खर्च दो	मेहर	उन के लिए	मुकर्रर किया	
وَعَلَى الْمُقْتَرِ قَدَرُهُ ۖ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٣٦﴾							
236	नेकोकार	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक	खर्च	उस की हैसियत	तंगदस्त और पर
وَأِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ							
और तुम मुकर्रर कर चुके हो		उन्हें हाथ लगाओ	कि	पहले	तुम उन्हें तलाक़ दो	और अगर	
لَهُنَّ فَرِيضَةٌ فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ							
या	वह मुआफ़ कर दें	यह कि	सिवाए	तुम ने मुकर्रर किया	जो	तो निस्फ़	मेहर उन के लिए
يَعْفُوا ۚ الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ							
परहेज़गारी के	ज़ियादा करीब	तुम मुआफ़ कर दो	और अगर	निकाह की गिरह	उस के हाथ में	वह जो	मुआफ़ कर दे
وَلَا تَنْسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٧﴾							
237	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	वेशक अल्लाह	बाहम	एहसान करना	और न भूलो
حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ							
अल्लाह के लिए	और खड़े रहो	दरमियानी	और नमाज़	नमाज़ों की	तुम हिफाज़त करो		
قَبِيلَيْنِ ﴿٢٣٨﴾ فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ							
अल्लाह	तो याद करो	तुम अमन पाओ	फिर जब	सवार	या	तो प्यादापा	तुम्हें डर हो
फिर अगर	238	फरमांवरदार (जमा)					
كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٩﴾ وَالَّذِينَ يُتَوَقَّونَ							
वफात पा जाएं	और जो लोग	239	जानते	तुम न थे	जो	उस ने तुम्हें सिखाया	जैसा कि
مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ۖ وَصِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا							
नान नफ़का	अपनी बीवियों के लिए	वसीयत	बीवियां	और छोड़ जाएं	तुम में से		
إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ إِخْرَاجٍ ۖ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي							
में	तुम पर	गुनाह	तो नहीं	वह निकल जाएं	फिर अगर	निकाले	बग़ैर एक साल तक
مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾							
240	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	दस्तूर	से	अपने तई	में जो वह करें
وَلِلْمُطَلَّاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾							
241	परहेज़गारों	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक	नान नफ़का	और मुतल्लका औरतों के लिए	
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾							
242	समझो	ताकि तुम	अपने अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ									
मौत	डर	हज़ारों	और वह	अपने घर (जमा)	से	निकले	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा
فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ									
फ़ज़ल वाला	वेशक अल्लाह	उन्हे ज़िन्दा किया	फिर	तुम मर जाओ	अल्लाह	उन्हें	सो कहा		
عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह का रास्ता	में	और तुम लड़ो	243	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	लोगों पर	
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ									
कर्ज़ दे अल्लाह	जो कि	वह	कौन	244	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ أَصْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُطُ									
और फ़राखी करता है	तंगी करता है	और अल्लाह	कई गुना ज़ियादा	उस के लिए	पस वह उसे बढ़ा दे	कर्ज़ अच्छा			
وَأَلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنْ بَعْدِ									
बाद	से	बनी इस्राईल	से	सरदारों	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	245	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ़
مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيِّ لَهُمْ ابْعَثْ لَنَا مَلَكًا يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह का रास्ता	में	हम लड़ें	एक बादशाह	हमारे लिए	मुक़र्र कर दें	अपने नबी से	उन्होंने ने कहा	जब	मूसा (अ)
قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا									
कि तुम न लड़ो	जंग	तुम पर फ़र्ज़ की जाए	अगर	हो सकता है कि तुम	क्या	उस ने कहा			
قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ									
से	हम निकाले गए	और अलबत्ता	अल्लाह की राह	में	हम लड़ेंगे	कि न	और हमें क्या हुआ	वह कहने लगे	
دِيَارِنَا وَأَبْنَاءِنَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا									
चन्द	सिवाए	वह फिर गए	जंग	उन पर फ़र्ज़ की गई	फिर जब	और अपनी आल औलाद	अपने घर		
مِّنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	उन का नबी	उन्हें	और कहा	246	ज़ालिमों को	जानने वाला	और अल्लाह	उन में से	
قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلَكًا قَالُوا اتِّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ									
बादशाहत	उस के लिए	हो सकती है	कैसे	वह बोले	बादशाह	तालूत	तुम्हारे लिए	मुक़र्र कर दिया है	
عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ									
माल	से	बुसज़त	और नहीं दी गई	उस से	बादशाहत के	ज़ियादा हक़दार	और हम	हम पर	
قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ									
इल्म	में	बुसज़त	और उसे ज़ियादा दी	तुम पर	उसे चुन लिया	अल्लाह	वेशक	उस ने कहा	
وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾									
247	जानने वाला है	बुसज़त वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिसे	अपना मुल्क	देता है	और अल्लाह	और जिस्म

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से निकले मौत के डर से? और वह हज़ारों थे,

सो अल्लाह ने उन्हें कहा तुम मर जाओ, फिर उन्हें ज़िन्दा किया, वेशक अल्लाह फ़ज़ल वाला है लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (243)

और तुम अल्लाह के रास्ते में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (244)

कौन है जो अल्लाह को कर्ज़ दे अच्छा कर्ज़, फिर वह उसे कई गुना ज़ियादा बढ़ा दे, अल्लाह तंगी (भी) देता है और फ़राखी (भी) देता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (245)

क्या तुम ने बनी इस्राईल के सरदारों की तरफ नहीं देखा मूसा के बाद? जब उन्होंने ने अपने नबी से कहा हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्र कर दें ताकि हम लड़ें

अल्लाह के रास्ते में, उस ने कहा: हो सकता है कि अगर तुम पर जंग फ़र्ज़ की जाए तो तुम न लड़ो, वह कहने लगे और हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह की राह में न लड़ेंगे,

और अलबत्ता हम अपने घरों से और अपनी आल औलाद से निकाले गए हैं, फिर जब उन पर जंग फ़र्ज़ की गई तो उन में से चन्द एक के सिवा (सब) फिर गए, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (246)

और कहा उन्हें उन के नबी ने वेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुक़र्र कर दिया है, वह बोले कैसे हम पर उस की बादशाहत हो सकती है?

हम उस से ज़ियादा बादशाहत के हक़दार हैं, और उसे बुसज़त नहीं दी गई माल से, उस ने कहा वेशक अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है और उसे ज़ियादा बुसज़त दी है इल्म और जिस्म में, और अल्लाह जिसे चाहता है अपना मुल्क देता है, और अल्लाह बुसज़त वाला जानने वाला है। (247)

और उन्हें उन के नबी ने कहा वेशक उस की हुकूमत की निशानी यह है कि तुम्हारे पास ताबूत आएगा, उस में तुम्हारे रब की तरफ से सामाने तसकीन होगा और बची हुई चीज़ें जो आले मूसा और आले हारून ने छोड़ी थीं उसे फरिश्ते उठा लाएंगे, वेशक उस में तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान वाले हो। (248)

फिर जब तालूत लश्कर के साथ बाहर निकला, उस ने कहा वेशक अल्लाह एक नहर से तुम्हारी आजमाइश करने वाला है, पस जिस ने उस से (पानी) पी लिया वह मुझ से नहीं, और जिस ने उसे न चखा वह वेशक मुझ से है सिवाए उस के जो अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले, फिर चन्द एक के सिवा उन्होंने ने उसे पी लिया, पस जब वह (तालूत) और जो उस के साथ ईमान लाए थे उस के पार हुए, उन्होंने ने कहा आज हमें ताकत नहीं जालूत और उस के लश्कर के साथ (मुक़ाबिले की), जो लोग यकीन रखते थे कि वह अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने ने कहा, बारहा छोटी जमाअतें ग़ालिब हुई हैं अल्लाह के हुकम से बड़ी जमाअतों पर, और अल्लाह सब् र करने वालों के साथ है। (249)

और जब जालूत और उस के लश्कर आमने सामने हुए तो उन्होंने ने कहा ऐ हमारे रब! हमारे (दिलों में) सब् र डाल दे, और हमारे क़दम जमादे, और हमारी मदद कर काफ़िर कौम पर। (250)

फिर उन्होंने ने अल्लाह के हुकम से उन्हें शिकस्त दी और दाऊद (अ) ने जालूत को क़तल किया, और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत अता की और उसे सिखाया जो चाहा, और अगर अल्लाह न हटाता बाज़ लोगों को बाज़ लोगों के ज़रीए तो ज़मीन ज़रूर ख़राब हो जाती और लेकिन अल्लाह तमाम ज़हानों पर फ़ज़ल वाला है। (251)

यह अल्लाह के अहकाम हैं, हम वह आप को ठीक ठीक सुनाते हैं और वेशक आप (स) ज़रूर रसूलों में से है। (252)

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ									
और कहा	उन्हें	उन का नबी	वेशक	निशानी	उस की हुकूमत	कि	आएगा तुम्हारे पास	ताबूत	उस में
سَكِينَةً مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ									
सामाने तसकीन	से	तुम्हारा रब	और बची हुई	उस से जो	छोड़ा	आले मूसा	और आले हारून		
تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾									
उठाएंगे उसे	फरिश्ते	वेशक	उस में	निशानी	तुम्हारे लिए	अगर	तुम हो	ईमान वाले	248
فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ ۖ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ									
फिर जब	बाहर निकला	तालूत	लश्कर के साथ	उस ने कहा	वेशक अल्लाह	तुम्हारी आजमाइश करने वाला	एक नहर से		
فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي ۖ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا									
पस जिस	पी लिया	उस से	तो नहीं	मुझ से	और जिस	उसे न चखा	तो वेशक वह	मुझ से	सिवाए
مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۖ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۖ فَلَمَّا جَاوَزَهُ									
जो	चुल्लू भर ले	एक चुल्लू	अपने हाथ से	फिर उन्होंने ने पी लिया	उस से	सिवाए	चन्द एक	उन से	पस जब
هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۖ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ									
वह	और वह जो	ईमान लाए	उस के साथ	उन्होंने ने कहा	नहीं ताकत	हमारे लिए	आज	जालूत के साथ	और उस का लश्कर
قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُّلْقُوا اللَّهَ ۖ كَمْ مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ									
कहा	जो लोग	यकीन रखते थे	कि वह	मिलने वाले	अल्लाह	बारहा	से	जमाअतें	छोटी
غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾ وَلَمَّا									
ग़ालिब हुई	जमाअतें	बड़ी	अल्लाह के हुकम से	और अल्लाह	साथ	सब्र करने वाले	249	और जब	
بَرَزُوا لَجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبَّتْ									
आमने सामने हुए	जालूत के	और उस का लश्कर	उन्होंने ने कहा	ऐ हमारे रब	डाल दे	हम पर	सब्र	और जमादे	
أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾ فَهَزَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ									
हमारे क़दम	और हमारी मदद कर	पर	कौम	काफ़िर (जमा)	250	फिर उन्होंने ने शिकस्त दी उन्हें	अल्लाह के हुकम से		
وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَاتَّاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ									
और क़तल किया	दाऊद (अ)	जालूत	और उसे दिया	अल्लाह	मुल्क	और हिक्मत	और उसे सिखाया		
مِمَّا يَشَاءُ ۖ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ									
जो	चाहा	और अगर न	हटाता	अल्लाह	लोग	बाज़ लोग	बाज़ के ज़रीए		
لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ									
ज़रूर ख़राब हो जाती	ज़मीन	और लेकिन	अल्लाह	फ़ज़ल वाला	पर	तमाम जहान	251	यह	
آيَةُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۖ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾									
अल्लाह के अहकाम	हम सुनाते हैं उन को	आप पर	ठीक ठीक	और वेशक आप (स)	ज़रूर-से	रसूल (जमा)	252		